शोध मंथन Vol. XIII No.II Apr.-June 2022 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com*

सामाजिक परिवेश में समकालीन महिला कलाकारों की भूमिका

प्राप्तिः 01.06.2022
स्वीकृतः 15.06.2022

55

रूबी चौधरी
शोधार्थी,
ईमेलः *rubynarwal1988@gmail.com*

डॉ० अंजू चौधरी (प्रोफेसर)
प्राचार्या
महिला महाविद्यालय किदवई नगर,
कानपुर

सारांश

एक कलाकार वस्तुतः एक सामाजिक इकाई होता है, जिस पर समाज के समस्त कार्य व्यापारों का कमोवेश उतना ही असर पड़ता है जितना कि एक कवि, कथाकार, नाटककार, या फिर एक जागरूक व्यक्ति पर पड़ता है। अपने आसपास और अतीत की तमाम घटनाओं से टकराकर वह यह तय करता है कि किन–किन स्थितियों, संदर्भो को, समस्याओं और सपनों को वह अपने कला–कर्म में प्राथमिकता दें, और किसे वह त्यागे। लिहाजा, यह तो तय है कि कलाकार अपने समाज और समय से कटा हुआ बौद्धिक अस्तित्व नहीं होता है। भारतीय कला की अपनी विधागत विशिष्टता के चलते, कलाकारों की कलाकृतियों में, उसके समय और समाज का प्रतिबिम्बन कभी साफ, कभी धुँधला सा लग सकता है, पर कलाकार अपने समाज के अन्दर से उपजी शक्तियों द्वारा ही अनिवार्य रूप से संचालित होता है। इसी कड़ी में आधुनिक महिला कलाकारों की नारीवादी व सामाजिक चेतना ने मौलिक रूप से समकालीन भारतीय कला की दिषा और मूल्यों को बदल दिया है और नैतिकता की एक बदलती हुई अवधारणा पेश की है जो महिला कलाकारों के लिए महत्वपूर्ण है। बड़े चिन्तनीय सामाजिक मुद्दों को उन्होने अपनी तकनीक के द्वारा प्रदर्शित किया है। भारत में व्याप्त सामाजिक कुरीतियों और संवदेनशील मुद्दों को उन्होने सक्रियता से अपने चित्र कार्यो मे दिखाने का प्रयास किया है जिसका प्रभाव दर्शकों पर पूर्ण रूप से पड़ा है।

मुख्य शब्द

आधुनिक, महिला कलाकार, कला, समाज, समकालीन, सामाजिक मुद्दें, ।

भारतीय कला चिन्तन यह अप्रत्यक्ष रूप से मानता है कि कला और समाज के बीच अविच्छिन्न संबन्ध है। प्रत्येक कलाकषति से कतिपय व्यक्तिगत और सामाजिक अपेक्षाएं होती है इसलिए वह अपने तात्कालिक और अंतिम सामाजिक घेरों से सम्बन्धित होती है। कला समस्त समाजिक क्षेत्र का एक अविभाज्य अंग है और उसे अलग करके नहीं देखा–समझा जा सकता। कला मे सामाजिक चेतना का प्रश्न कला के सामाजिक विशय और रूप से जुड़ा हुआ है, न कि उसके चरम लक्ष्य से और यही कारण है कि भारतीय परम्परा ने कलावस्तु के केवल बाह्य सौन्दर्यपरक रूपों से अधिक उसके आंतरिक भाव पर जोर दिया है। सामाजिक विशयों की अत्यन्त जटिल बुनावट होती है जिसमे परम्पराओं और वंश

परम्पराओं, स्मृतियों, मिथकों और प्रतीकों, परिकल्पनाओं और आदर्शो आदि के उसी तरह के ताने–बाने बुने रहते है जिसमे उसकी राजनीतिक और आर्थिक स्थिति, धार्मिक आदर्शपरक और सांस्कृतिक लक्ष्य, प्रयोजन, स्वप्न, आशाएं और आकाक्षाएं आदि सम्मिलित होते है। कलाकार जिस समाज का अंग है कला उसके सम्पूर्ण सामाजिक दृश्य, वातावरण और पर्यावरण के संदर्भ और परिपेक्ष्य मे देखी और जानी जाती है तो वह एक नया अर्थ और विशेषता ग्रहण कर लेती है और तब हम उसे अधिक पूर्ण और अच्छे ढंग से समझते है। कलाकार जिस समाज मे रहता है उसे उसकी सामाजिक स्थिति व वास्तविक प्रकृति की पूरी समझ होनी आवश्यक है तभी तो वह समाज मे घटित होने वाली घटनाओं को अपनी कृतियों मे संदर्भित कर सकता है। कलाकार को उस स्थिति विशेष की सही तस्वीर और समझ प्राप्त होनी चाहिये और साथ ही उस सम्पूर्ण सामाजिक ताने–बाने व विषय को ढंग से प्रस्तुत कर सकता है जिससे दर्शक को कलात्मक पूर्णता की अनुभूति होती है।[1]

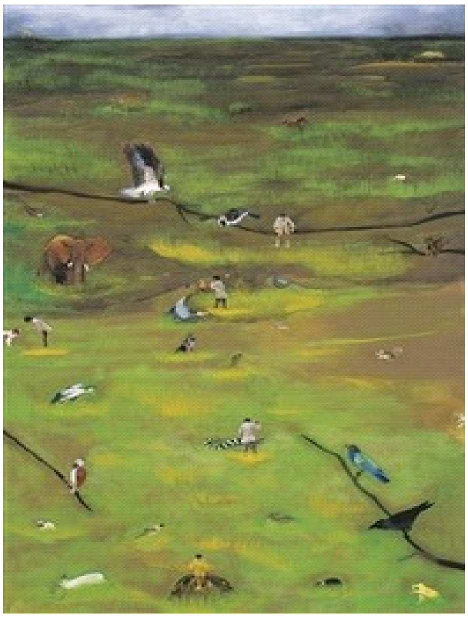

Hema Upadhyay
Bleeding hearts, 2005

कला समाज का दर्पण होती है। समाज की कला से विमुखता तात्कालिक एवं भ्रामक लगती है। वास्तविकता यह है कि कला का आदिकाल से समाजसे सम्बन्ध रहा है तभी तो वह सामाजिक रूप से हो रही दैनिक घटनाओं को अपनी चित्राकृतियों मे दर्शाता है। कला के विषय में महत्वपूर्ण तथ्य है कि वह बिना किसी हानि या लाभ के सामाजिक हलकों मे पहुचने का गुण रखती है। चित्रकार भी इस समाज का प्राणी है उसे अपना जीवन निर्वहन भी इसी समाज मे रहकर करना है और अपनी उपस्थिति का बोध कराता है। प्रत्येक समाज की अपनी कला मान्यताएँ एवं परम्पराएँ होती है। उनका स्तर विभिन्न श्रेणियों का हो सकता है किन्तु कलाकार को समाज के विभिन्न पहलुओं को अपनी कृतियों के माध्यम से दर्शाना ही उचित होता है। संचार के युग मे आज छोटे शहरों के कला प्रेमी भी यह ज्ञात रखते है कि कला के क्षेत्र मे क्या हो रहा है या किसी अमुक कलाकार द्वारा ऐसा क्या कार्य बनाया गया है जो समाज को आईना दिखाने का प्रयास कर रहा है। आज के समकालीन युग मे उन कलाकारों को विशेष स्थान दिया जा रहा है जो अपनी रचनात्मक ऊर्जा से किसी भी माध्यम में सामाजिक चेतना या जागरूकता पर चित्रण करते है जिससे वह समाज से जुड़ाव रखने मे पूर्णता सक्षम सिद्ध हुआ है।[2]

आधुनिकीकरण एवं पुर्नजागरण की प्रक्रिया ने भारतवर्ष की कला संस्कृति और साहित्य को भी नवीन मोड़ पर ला खड़ा किया। आधुनिक भारतीय चित्रकला की थोड़ी सी अवधि में एक लम्बी यात्रा है। असल मे भारतीय चित्रकला में सामाजिक संदर्भो की विस्तृत खोज सबसे पहले

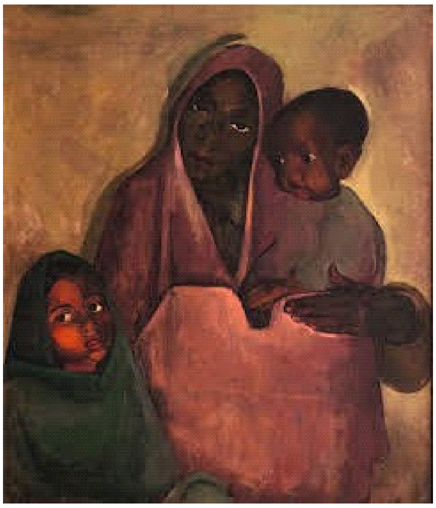

Title: Mother India byAmrita Sher-Gil, 1935, Shimla
Dimensions: W 65 x H 81.8 cm

अमृता शेरगिल के चित्रण कार्य मे देखने को मिलती है। अमृता शेरगिल ने थोड़े समय में ही भारतीय जनजीवन के फलक को आधार बनाकर मानवीय संवेदनाओ का चित्रण प्रारम्भ किया जिससे भारतीय चित्रकला में नवीन आयाम प्रस्तुत हुए। बच्चों को गोद मे लिए साधारण 'औरत', 'सिक्ख संगीतकार', 'नववधु का श्रृगांर', 'कहानी कहती हुई–औरतें', 'ऊँट और ऊँटवाले', 'मदर इण्डिया' आदि चित्रों के माध्यम से निम्न वर्ग के सामाजिक संदर्भो का चित्रण कर अमृता शेरगिल ने भारतीय चित्रकला को सही रास्ता दिखाया। आगे चलकर उस परम्परा मे बहुत से चित्रकारों ने भारतीय समाज के विभिन्न पक्षों को उजागर कर चित्रकला को सामाजिक संदर्भो से जोड़ दिया। उनकी जीवन शैली पाश्चात्य से प्रभावित थी पर उन्होनें भारतीय जनजीवन को गहराई से अंकित कर भारतीय आधुनिक चित्रकला की आधार शिला रख दी।वास्तव मे स्वतंत्रता के बाद भारतीय चित्रकला विविध धारा में प्रवाहित हुई। कुछ कलाकार परम्परा से ही चिपके रहें और उन्होंने पारम्परिक चित्रों में नवीनता और आधुनिकता पैदा करने की कोशिश की किन्तु उस कला को आधुनिक कला के मानदण्डों पर खरा नहीं कहा जा सकता। दूसरी धारा के कलाकारों ने पारम्परिक मूर्त स्वरूपों को डिस्टोर्ट पर सामाजिक संदर्भो से जोड़कर चित्रांकन किया जिसमें बहुत से चित्रकारों ने आदिवासी समाज, मछुआरे, किसान, ग्रामीण जन, श्रमिक वर्ग, मध्य वर्ग आदि का अंकन कर भारतीयता की पहचान बनाये रखी। शहरी जीवन की घुटन, संत्रास, भागमभाग अर्न्तमन की मार्मिक व्यथा को व्यष्टि रूप में अंकित कर उन्होने भारतीय चित्रकला को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर जोड़ दिया तथा समष्टि को जोड़ने वाली चित्रकला का सामाजिक सदर्भ अधिक उभरकर आया है।[3]

समकालीन भारतीय कला सदैव अपने नये रचनात्मक तरीकों के लिए प्रसिद्ध है। कलाकारो द्वारा परिवेशगत स्थितियों तथा सामाजिक व्यवहारों के अनुरूप आवश्यकताओं का आंकलन किया गया है। सामाजिक अभिरूचि के मामले में महिला कलाकार अपनी कलाकषतियों के माध्यम से विशिष्ट स्थान स्थापित करती है। महिला कलाकारों की समाज में सशक्त स्थिति की शुरूआत अमृता शेरगिल से हुई थी। बंगाल शैली मे महिला कलाकारों का वर्चस्व रहा जो यह दर्शाता है कि उन्हें सामाजिक बन्धनों का सामना निम्न रूप से करना पड़ा। समकालीन कला मे आज महिला कलाकारो की सुदृढ़ स्थिति है जो समाज व उसमे हो रही घटनाओ के प्रति जागरूक है और अपनी कृतियों मे उन्हे प्रदर्शित करने को आतुर है। अर्पणा कौर उन महिला कलाकारों में से एक है जो सामाजिक परिस्थितियों और कुरीतियों के चित्रित करने के स्मरणीय है। इन्होंने अपने सूक्ष्मतम अनुभवों और जीवन के छोटे–बड़े पहलुओं को अपने चित्रोंका विषय बनाया है। अर्पण कौर कैनवास पर परिवर्तित हुई तत्कालीन सामाजिक घटनाओं

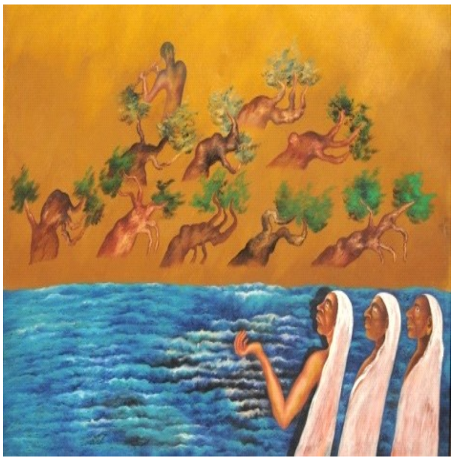

Title: Widows of Vrindaban
Date : 1997
Dimensions: $4^{1/2}$× 6 ft.
Type: Painting

को प्रस्तुत करती है उनकी कृतियाँ नौकरानी, वृन्दावन की विधवाएं और निर्भया जैसे जघन्य अपराधों पर घटित विषयों को लेकर चित्रण किया है। इनका यह कार्य समाज मे महिलाओं के प्रति चिन्ताजनक स्थिति को प्रस्तुत करती है। कौर के अनुसार जगत में रंगों और तूलिका का प्रयोग कर महिलाओं की तत्कालीन परिस्थितियों तथा विचारशील तथ्यों को कला प्रदर्शिनियों के माध्यम से अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक पहुँचाना हमारा ध्येय है। गोगी सरोजपाल भी उन कलाकारों मे से है जिन्होंने महिला जीवन को कई माध्यमों मे पिरोया है। इनमें संकरता से प्रभावित आधा स्त्री तथा आधा पशु या पक्षी का आकार लेकर स्त्री अपने अस्तित्व और समाज मे स्थिति को दिखाती है।[4]

गंगा देवी जैसी महान कलाकार जिन्होंने मिथिला की कला से अपनी पहचान को सुदृढ़ किया वे भी आरम्भ में समाज व परिवार के संकीर्ण सोच का शिकार हुई तथा उन्होंने पारिवारिक शोषण भी बहुत झेला, किन्तु इन सबसे उभर कर उन्होंने कला को ही अपना कर्म समझ कर आगे बढ़ने का प्रयास किया जिसमें वे पूर्ण सफल भी हुई।[5] भारती दयाल भी बिहार के मिथिला जिले से उभरकर एक प्रख्यात समकालीन कलाकार बनी। उनका परिवार उन्हें सदैव ही कला के लिए प्रोत्साहित करता रहा जिस कारण उन्होंने यह ठान लिया कि वे कला क्षेत्र में अपना एक मजबूत स्थान बनायेंगी और उन सभी महिलाओं को प्रोत्साहित करेगीं जिन्हें सामाजिक व पारिवारिक रूप से उचित प्रोत्सहन नहीं मिल पाता है। भारती दयाल ने हजारों महिलाओं को इस काम के माध्यम से सक्षम बनाया है जो एक आज आत्मनिर्भर होकर अपना व परिवार का भरण–पोषण कर रही है तथा कुछ तो कलाकार के रूप में ख्याति भी प्राप्त कर रही हैं।[6] प्रफुल्ला दहानुकर जो एक चित्रकार थी उन्होनें भी अपनी चित्रकला के माध्यम से पुरूष वर्चस्व वाले कलाकारों के समय में एक अपना अलग स्थान बनाया जा कि अपने आप में यह सिद्ध करता है कि यदि मन में ठान लिया जाए तो

Sheela Gowda, Protest, My Son, 2011, ink-jet print on wallpaper, watercolor and ink-jet print on paper, horn, fur, glass, 12' 8" x 8' 63

कुछ भी असंभव नहीं। उन्होंने अनेकों युवा कलाकारों को प्रोत्साहित किया तथा उनकी हर सम्भव मदद की ताकि वे अच्छे कलाकार बन सकें। प्रफुल्ला ने बिना किसी भेदभाव के समाज के हर वर्ग के व्यक्ति को प्रेरित किया जिसमें उन्हें कलाकार या चित्रकार बनने की इच्छा दिखी।[7]

Rekha Rodwittiya, Sixty: Transient worlds of belonging. 2018. Watercolour on paper, 22 x 30 inches.

समकालीन कलाकार शीला गोउडा जिन्होंने महिला मजदूरों की दशा पर प्रकाश डालते हुए एक चित्र की रचना की जिसमें उन्होंने पित्रसत्ता के कारण दमित महिलाओं की स्थिति को दर्शाने का प्रयास किया। इसके अतिरिक्त उन्होंने भारत में झुग्गियों में रहने वाले लागों की दुर्दशा को भी चित्रित किया। अर्पिता सिंह ने अपनी कला के माध्यम से नफरत, द्वेश, अन्याय जैसी सामाजिक बुराईयों या समस्याओं को चित्रित किया है। वह भारत में बलिकाओं से सम्बधित बीमारियों व परेशानियों के बारे में भी चित्रण करती है। उन्होंने कई संवेदनशील मुदद्ों जैसे पूर्व प्रधानमंत्री इन्दिरा गाँधी की हत्या 1984 के सिक्ख दंगे, साम्प्रदायिक दंगे और खाड़ी युद्ध जैसे विषय शामिल है। रेखा रोडविटिया उन कलाकारों में से है जिन्होंने महिलाओं के शोषण व उन पर हुए अत्याचारों को चित्रित कर समाज का एक अलग स्वरूप दिखाने का प्रयास किया है। इनके चित्रों मे समाज मे व्याप्त भावनात्मक और शारीरिक हिंसा के प्रति उनकी संवेदनशीलता को उनके चित्रण कार्य में साफ तौर पर देखा जा सकता है इसके साथ ही उन्होंने पर्यावरण मे हो रहे प्रदूशित अवयवों के ऊपर भी चित्रण किया है और यह दर्शाने का प्रयास किया है कि किस प्रकार मनुष्य, समाज प्रकृति का दुरूपयोग कर रहा है। उन्होंने यौन हिंसा जैसे मुद्दो को भी बहुत ही संवेदनशीलता के साथ चित्रित किया है।[8]

भारतीय समकालीन कला के इन सभी महिला कलाकारों द्वारा ऐसे विषयों का चयन किया गया है जो मानव को इनसे जागरूक करने का प्रयास करता है तथा साथ ही समाज मे व्याप्त कुरीतियों के प्रति उन्हे अवगत कराने तथा उनके विरूद्ध लड़ने की शक्ति देने का भी प्रयास करता है। समकालीन कला मे विशयों के चयन मे स्वतंत्रता भी एक बड़ा कारण है कि महिला कलाकार स्वतंत्र होकर अपने विषयों का चुनाव करती हैं। वे सामाजिक व पारिवारिक बंधनो से मुक्त होकर अपने मन की आवाज को सुनती है। वे एक जागरूक नागरिक होने का कर्तव्य निभाते हुए सामाजिक मुद्दो पर अपनी कलाकृतियों के माध्यम से अपने विचारों को स्वतंत्र रूप से लोगों तक पहुँचाती हैं। पहले के समय में आन्तरिक द्वन्द के कारण तथा अपने मन में ही अपने विचारों को सीमित रखने की जो प्रथा महिला कलाकारों ने भोगी वह समकालीन कला मे टूटती प्रतीत हुई। स्वतन्त्र विषय, स्वतन्त्र विचार, स्वतन्त्र अस्तित्व इन सभी के प्रयोग से वर्तमान समय की कला मे महिला कलाकारों ने अपनी स्थिति को समाज मे ही नही अपितु हर दृष्टिकोण के पहलू पर अपने आप को सुदृढ़ किया है। देश की समस्याओं से अवगत कराती हुई समकालीन महिला कलाकारों

की सामजिक मुद्दों से प्ररित ये कलाकृतियाँ कला जगत की उपलब्धि का प्रमाण है और अपने समय के परिवर्तन पर एक आलोचनात्मक टिप्पणी भी है। कला का अपने समाज मे होने का एक सबूत है जो उन कलाकारों के लिए प्रेरणा की तरह है जिनके लिए कला का आशय समाज से दूर रहना है। परन्तु आज भी ग्रामीण परिवेश मे महिलाओं की तुलनात्मक रूप से कम स्वतन्त्रता प्राप्त है अतएव ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं की कलाओं मे भागीदारी न के बराबर है। वे या तो लोककला तक ही सीमित है या फिर घरों में होने वाली हस्तकला तक ही उनका अस्तित्व रह जाता है जो कि चिन्तन का विषय है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. राय, निहाररंजन. (1978). भारतीय कला अध्ययन (भारतीय कला चर्चा की भूमिका). द मैकमिलन कंपनी ऑफ इंडिया।
2. विरंजन, राम. (2003). समकालीन भारतीय कला. निर्मल बुक एजेंसीः कुरूक्षेत्र. पृष्ठ 42.
3. (2000). समकालीन कला पत्रिका. ललित कला अकादमीः अंक–18. पृष्ठ 58.
4. (2016). समकालीन कला. ललित कला अकादमीः अंक– 48. फरवरी. पृष्ठ 72–73.
5. Jain, Jyotindra. (2007). Ganga Devi tradition and expression in madhubani painting. Mapin publishing: Ahmedabad.
6. In conversation with artist bharti dayal.
7. Baria, Zeenia. (2014). an ode to a master. Times of India. July 14.
8. Jhaveri, Amrita. (2005). A guide to 101 modern & contemporary Indian artists. India book house: Mumbai.